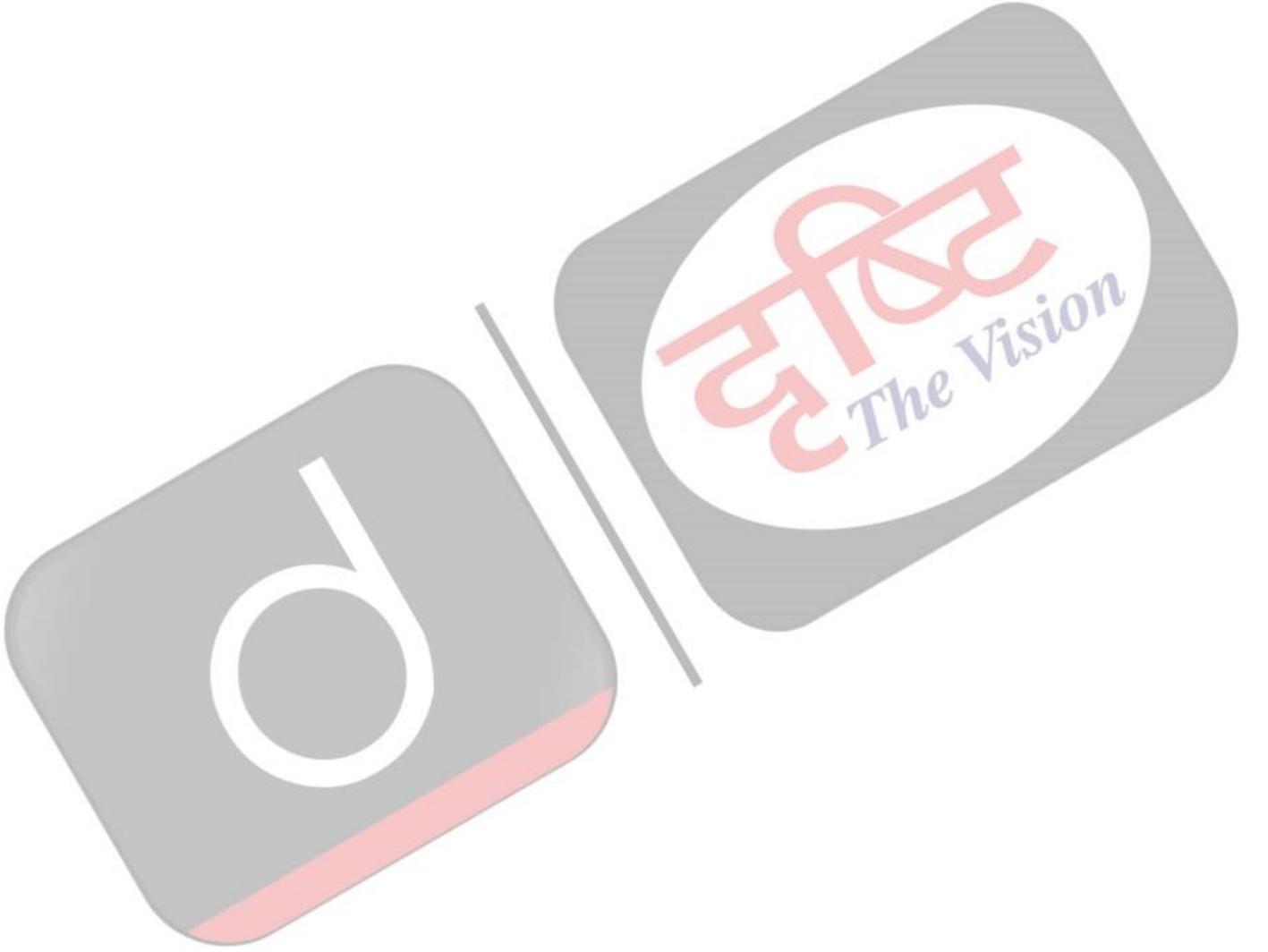


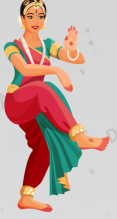


भरतनाट्यम (तमलिनाडु)



भरतनाट्यम (तमिलनाडु)

नृत्य का सबसे प्राचीनतम रूप



उत्पत्ति

सादिर: मंदिर नर्तकों या देवदासियों की एकल नृत्य प्रस्तुति।
इसे 'दाशीअट्टम' भी कहा जाता है।

उल्लेख

नंदिकेश्वर की रचना अभिनय दर्पण में।
प्राचीन काल के चित्रों तथा पाषाण एवं धातु की मूर्तियों में। उदाहरण- चिदंबरम मंदिर के गोपुरम।

नृत्य के 7 प्रमुख अवयव

अंगारिप्पू

- आधारभूत नृत्य मुद्राएँ
- लयबद्ध शब्दांश
- यह ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने का प्रतीक है।

जातिस्वरम

- नृत्य घटक
- अभिव्यक्तिरहित
- विभिन्न मुद्राएँ तथा हरकतें

शब्दम्

- अभिव्यक्त शब्दों के साथ नाटकीय तत्व
- ईश्वर की प्रशंसा

वर्णम्

- नृत्य घटक
- नृत्य और भावनाओं का संयोजन
- कहानी व्यक्त करने के लिये ताल और राग के साथ तालमेल

पद्म

- आध्यात्मिक संदेश का अभिनय (अभिव्यक्ति)
- हल्का संगीत
- भावनात्मक नृत्य

जावली

- लघु प्रेमगीति
- तीव्र गति के साथ प्रस्तुत

थिल्लन

- प्रस्तुतिकरण की समापन अवस्था
- विशुद्ध नृत्य

- नृत्य पाठ करने वाले व्यक्ति को **नट्टुवनार** कहते हैं।
- भरतनाट्यम को प्रायः 'अग्नि नृत्य' के नाम से भी जाना जाता है। इसमें अधिकांश मुद्राएँ लहराती हुई आग की लपटों के सदृश दिखती हैं।
- भरतनाट्यम को एकचर्य भी कहा जाता है, जिसमें एक ही नर्तक बहुत-सी अलग-अलग भूमिकाओं को निभाता है।
- तांडव तथा लास्य दोनों पक्षों पर समान बल।
- मुख्य मुद्रा: कटखामुख हस्त, जिसमें तीन अंगुलियों को जोड़कर 'ॐ' का प्रतीक निर्मित किया जाता है।

- वाद्ययंत्र: मृदंगम, वायलिन या वीणा, बाँसुरी, झांझ।
- एकल महिला, पुरुष और नर्तक समूहों द्वारा प्रदर्शन।
- भरतनाट्यम के प्रमुख समर्थक: रुक्मिणी देवी अरुन्डेल, यामिनी कृष्णमूर्ति, लक्ष्मी विश्वनाथन, पद्मा सुब्रह्मण्यम मृणालिनी साराभाई, मल्लिका साराभाई आदि।



[और पढ़ें...](#)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/bharatnatyam-tamil-nadu->

